नारियल की नट्टी की ढाल बनाते हैं ऑक्टोपस

ऑस्ट्रेलिया में मेलबोर्न स्थित म्यूज़ियम विक्टोरिया के समुद्र-जीव वैज्ञानिक जूलियन फिन ने हाल ही में कम से कम 5 ऑक्टोपसों की फिल्म बनाई है जिसमें वे एक नारियल की नट्टी का उपयोग अपनी सुरक्षा के लिए करते नज़र आते हैं। यह पहली बार है कि किसी रीढ़विहीन जंतु को इस तरह से औज़ार का उपयोग करते देखा गया है।

इंडोनेशिया के तटवर्ती गांवों के लोग आम तौर पर नारियल का उपयोग करने के बाद उनकी नट्टी को समुद्र में फेंक देते हैं। जब ऑक्टोपस समुद्र के पेंदे में इस नट्टी के संपर्क में आते हैं, तो वे इसे पलटकर एक नाव सरीखा रख देते हैं और इसमें सवार हो जाते हैं। आठों टांगें बाहर लटकती रहती हैं। टांगों को थोड़ा सख्त करके वे नट्टी पर पकड़ बना लेते हैं और चल पड़ते हैं। लगभग ऐसा लगता है जैसे गेड़ियों पर चल रहे हों।

बाद में जब ऑक्टोपस को खतरा महसूस होता है तो वह इस नट्टी को पलटकर इसके नीचे छिप जाता है। ठीक जैसे कछुआ अपनी ढाल के नीचे छिपता है। फिन ने तो यहां तक देखा (और फिल्म भी बनाई) कि कुछ ऑक्टोपस दो नट्टियां ले लेते हैं और उनके बीच में छिपकर बाहर झांकते रहते हैं।

इस मामले में जूलियन फिन का मत है कि ऑक्टोपस ने इस तरह से किसी ढाल का उपयोग सीपियों के संदर्भ में सीखा होगा और अब वे नारियल की नट्टी का उपयोग करने लगे हैं। वे मानते हैं कि यह औज़ार बनाने जैसा ही है। आम तौर पर प्राणी वैज्ञानिक मानते हैं किसी जंतु द्वारा औज़ार बनाने का मतलब यह है कि वह किसी बाहरी वस्तु का उपयोग किसी अन्य बाहरी चीज़ पर क्रिया करने के लिए करे। इस दृष्टि से तो ऑक्टोपस द्वारा नारियल की नट्टी का उपयोग पूरी तरह से औज़ार बनाने की श्रेणी में नहीं आता क्योंकि एक केंकड़ा भी शंख का उपयोग ढाल के रूप में करता है। मगर फिन का मत है कि इससे ऑक्टोपस में संज्ञान क्षमता का पता चलता है क्योंकि उन्होंने देखा है कि वे इस नट्टी को भावी उपयोग के लिए बचाकर रखते हैं। वैसे जंतु व्यवहार का अध्ययन करने वाले अन्य वैज्ञानिक मानते हैं कि इस संदर्भ में और अध्ययन की आवश्यकता है। खास तौर से यह देखना ज़रूरी होगा कि इस व्यवहार का विकास कैसे हुआ है। तभी पता चल पाएगा कि इसके लिए बुद्धि के कितने परिष्कृत स्तर की आवश्यकता होती है। ***(स्रोत फीचर्स)***